श्री सिद्ध विधान
एवं
श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान

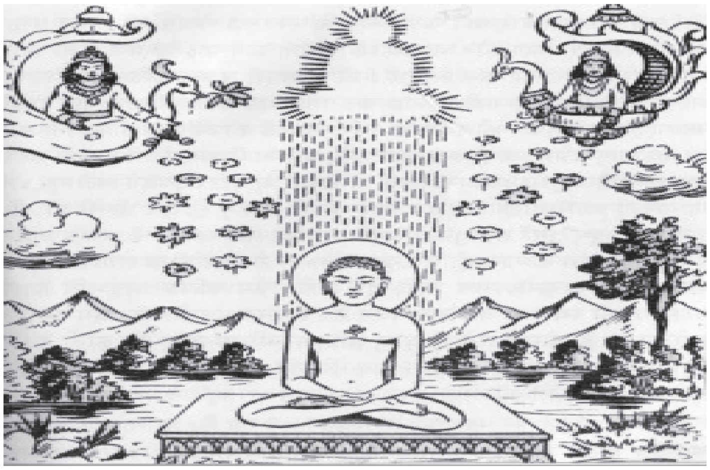

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री सिद्धविधान एवं श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	द्वितीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	20/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्यासुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

ब्र० अंशुल भैयाजी, रवीन्द्र-श्रीमती इंद्रादेवी, विजय-मधु, मनीष-रजनी, पुलक, संभव, प्रांजल, खुशी

कोलारस जिला शिवपुरी (म.प्र.)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री सिद्ध विधान

स्थापना

(सखी)

नहिं भाग्य भरोसे रह कर, पुरुषार्थ किया सब सहकर।
वैराग्य यान पर चढ़कर, फिर जा पहुँचे जो शिवपुर॥
वो चिदानंद सिद्धातम, सर्वोच्च पूज्य अविनाशी।
जो ज्ञान शरीरी निर्मल, हैं लोक शिखर के वासी॥
चैतन्य शुद्ध अब करने, पूजें सब सिद्ध जिनों को।
हो कृपा सिद्ध प्रभु की तो, हम नाशें भव भ्रमणों को॥
देह प्राप्त कर देह से, पाए देहातीत।
उन सिद्धों के चरण में, वंदन हो अगणीत॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ...। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

जल जैसा कंचन आतम, सब सिद्ध प्रभुजी पाए।
तज रागद्वेष मिथ्यामल, पुद्गल के बन्ध नशाए॥
अब जन्म मरण के बन्धन, अपने सम दूर करा दो।
हम जल से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

तज मोह ताप की लपटें, निज की शीतलता पाई।
अध्यात्म सदन में रमके, निज आत्म विभूति बचाई॥
संयोग वियोग की ज्वाला, अपने सम दूर करा दो।
चंदन से करते वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

जब छूटे झूठे आश्रय, तब अन्तर्लीन हुए हो।
तज आधि व्याधि उपाधि, चित् खण्डअखण्ड छुए हो॥
अब नाथ हमारी भटकन, अपने सम दूर करा दो।
ले पुंज करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं..।

चारित्र गन्ध से चेतन, हे नाथ! आपकी महकी।
तो चेतन सोन चिरैया, चैतन्य बाग में चहकी॥
अब काम शिकारी का भय, अपने सम दूर करा दो।
ले पुष्प करें हम वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं ...।

जब ज्ञानामृत सुख रस का, अन्तर से झरना झरता।
फिर उसे न दुनियाँ रुचती, वह भोग स्वयं का करता॥
अब क्षुधा रोग की पीड़ा, अपने सम दूर करा दो।
नैवेद्य करें हम अर्पण, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

खलु चिच्चदेव की ज्योति, जो अन्धकार को खा ले।
वह दिखे जले न बाहर, चैतन्य सदन प्रकटा ले॥
अब मोह अमावस काली, अपने सम दूर करा दो।
हम करें आरती वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

जब महका निज सौरभ तो, हर कर्म कली मुरझायी।
चित् चमत्कार देखा तो, फिर मुक्तिरमा शर्मायी॥

जड़ चेतन का मिश्रण अब, अपने सम दूर करा दो।
हम करें धूप से वन्दन, हमको भी सिद्ध बना लो॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।
जो खोज चुका हो दुर्लभ, अनुपम निज रूप सुहाना।
वो यहाँ वहाँ क्यों भटके, जो पाये मोक्ष ठिकाना॥
संकल्प विकल्प सभी अब, अपने सम दूर करा दो।
फल अर्पित करें नमन हम, हमको भी सिद्ध बना लो॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्ष फल प्राप्तये फलं...।
कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्ति वधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द चिद्रूप हैं, चित् चैतन्य विलास।
जिनके गुण गण में बसे भक्तों का संन्यास ॥

(सखी)

जो स्वयं सिद्ध हैं जग में, जो सिद्ध धाम के स्वामी।
चैतन्य निलय के वासी, जिन्हें बारम्बार नमामि॥१॥
सब कर्म समूह नशाके,सुन्दर आतम जो पाये।
वह अनुपम स्वरूप पाने, हम गुण गाने ललचाये॥२॥
ज्यों मिले साध्य साधन तो, कुंदन बन जाता कंकर।
त्यों कृपा आपकी हो तो, हम भक्त बनें शिव शंकर॥३॥

जब सिद्ध दशा मिलती तो, नहिं अभाव हो आतम का।
नहिं नष्ट ज्ञान दर्शन हो, यह मत है जिनशासन का॥४॥
जो त्याग तपस्या करके, निज पर का मंगल करके।
जब कर्म पटल सब हरते, तो प्राप्त आठ गुण करके॥५॥
झट सिद्धालय में वस के, भोगें वो अनन्त सुख को।
हे सुख सम्पन्न जिनेश्वर, हम खोजें बस उस सुख को॥६॥
वह सुख उत्पन्न स्वयं से, जो निरुपम है बिन बाधा।
प्रतिपक्ष रहित अविनाशी, ना कम होता ना ज्यादा॥ ७॥
वह भोग विषय में न होता, वह रहता अचल सदा जो।
सिद्धों ने जिनको भोगा, हमको भी वही चखा दो॥८॥
प्रभु तुमने रोग हरे तो, औषध से नहीं प्रयोजन।
जब अंध हरा तो तुमको, दीपक से नहीं प्रयोजन॥९॥
जब भूख प्यास हर ली तो, षट् रस भोजन से क्या हो।
जब तुमने गंध हरी तो, चंदन फूलों से क्या हो॥१०॥
जब श्रमण बने तो तुमने, श्रम निद्रा पूर्ण मिटायी।
तब कोमल आसन शय्या, क्या काम तुम्हारे आयी॥११॥
ऐसी वह सिद्ध अवस्था, जो परम सुहानी पायी।
बस उसको पाने हमने, यह पूजन आज रचायी॥१२॥
पूजन का यही प्रयोजन, हो नमन सभी सिद्धों को।
हो रहे हुये होंगे जो, यशवान पूज्य सिद्धों को॥१३॥
नित तीनों संध्याओं में, हम करते उन्हें नमोस्तु।
वह सिद्ध दशा बस पायें, 'सुव्रत' की जो प्रिय वस्तु॥१४॥

सिद्ध भक्ति निर्दोष जो, करे नमन वा ध्यान।
सिद्धों जैसा शीघ्र वह, सुखी बने भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जयमाला महार्घ्यं...।

अर्घावली (ज्ञानोदय)

१. क्षायिक सम्यक्त्व गुण

पूर्ण रूप से मोहनीय का, किया जिन्होंने पूरा क्षय।
तत्त्वज्ञान विपरीत हरे जो, वो क्षायिक सम्यक्त्व निलय॥
जीवों का यह दुख हर लेता, सुखी करे निज आतम को।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, नमस्कार सिद्धातम को॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, हो मिथ्या दुःख नाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व गुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

२. क्षायिक अनन्त ज्ञान

पूर्ण नशा जब ज्ञानावरणी, उदित सूर्य तब ज्ञान हुआ।
सभी द्रव्य गुण पर्यायों के, साथ आत्म का ध्यान हुआ॥
जीवों के अज्ञान अँधेरे, अनन्त केवलज्ञान हरें।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, जिनका हम सम्मान करें॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, अघ अज्ञान विनाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तज्ञान संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

३. क्षायिक अनंत दर्शन

दर्शन आवरणी नाशा तो, दृष्टि शुद्ध अत्यन्त हुई।
सकल ज्ञेय को युगपत देखे, आत्म ज्योति भी प्रकट हुई॥

दृष्टि दोष आवरण भव्य के, अनंत दर्शन दूर करें।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, वंदन उन्हें जरूर करें॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, दर्शन दोष विनाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तदर्शन संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

४. क्षायिक अनन्त वीर्य

अंतराय कर्मों के कारण, विघ्न मिले निज बल न मिले।
अंतराय की शक्ति नशी तो, अतुल शक्ति से आत्म खिले॥
भव्य जनों की हरे पराजय, अतुल्य वीर्य पराक्रम दे।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, उन्हें नमन शुद्धातम से॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, अन्तराय हो नाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तवीर्य संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

५. सूक्ष्मत्व गुण

रूप रंग तन का निर्माता, नाम कर्म जब पूर्ण नशा।
इन्द्रिय मन से हुए अगोचर, रूप अमूर्तिक आत्म वसा॥
नाम काम जगधाम भक्त के, गुण सूक्ष्मत्व हरण करते।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, हम तो उन्हें नमन करते॥
सिद्ध प्रभु की भक्ति से, नामकर्म हो नाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सूक्ष्मत्व गुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

६. अवगाहनत्व गुण

देव नरक पशु मनुज आयु के, दुखद कर्म जब नश जायें।
जिससे एक हि जीव क्षेत्र में, अनंत सिद्ध समा जायें॥
भक्तों के बध बंधन दुख को, गुण अवगाहनत्व हर ले।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, आतम उन्हें नमन कर ले॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, हो आयु कर्म विनाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अवगाहनत्व गुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

७. अगुरुलघुत्व गुण

उच्च नीच कुल का दाता जो, गोत्र कर्म जब दूर हुआ।
भेद भाव छुटपन बड़पन का, नशने को मजबूर हुआ॥
ऊँच नीच कुल वंश आधियाँ, अगुरुलघुत्व गुण नशा रहा।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये वह, भक्त जिन्हें सिर झुका रहा॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, गोत्र कर्म हो नाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अगुरुलघुत्व गुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

८. अव्याबाधत्व गुण

सांसारिक सुख-दुख के दाता, वेदनीय जब घातित हों।
तब न किसी को बाधा देते, तब न किसी से बाधित हों॥
दुख संकट बाधा जो हरता, अव्याबाध परम सुख है।
सभी सिद्ध प्रभु प्राप्त किये, वह भक्त उन्हीं के सम्मुख है॥

सिद्ध प्रभु की भक्ति से, वेदनीय हो नाश।
सुनो भक्त की प्रार्थना, हमें बुला लो पास॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अव्याबाधत्व गुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पुण्य बढ़ाकर द्रव्य सजाकर, भाव भक्ति से हम नाचें।
सिद्ध प्रभु सर्वोच्च तीर्थ का, आत्मशक्ति से यश बाचें॥
बदले में बस इतना चाहें, सुन लो अरजी चेतन नाथ।
सूर्य चाँद भू जब तक हों, तब तक देते रहना साथ॥
चिदानंद चिद्रूप है, सिद्धचक्र का धाम।
सिद्धचक्र प्रभु नाम को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टगुण संयुक्ताय अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जिनशासन में विश्व में, जो सर्वोच्च महान।
ऐसे सिद्ध समूह हो बारम्बार प्रणाम॥
अनन्त गुण में मग्न जो, पूजनीय भगवान।
वन्दनीय जो नित्य है, अतः करें गुणगान॥

(सखी)

शुद्धात्म ब्रह्म वैदेही, हे अजर अमर अविनाशी।
चिद् ब्रह्म विलासी ज्ञानी, हे सिद्धालय के वासी॥१॥
हमको तो यही खबर है, सिद्धों का नाम अमर है।
हम सिद्ध शीघ्र बन जाएँ, यह मन में उठी लहर है॥२॥
जब मन में उठी लहर तो, लगती न दूर डगर है।

संसार लगे अब ऐसा, जैसे कि मधुर जहर है॥३॥
जो अमृत देख चुका हो, वह कौन जहर को खाये।
उसकी कीमत हो कुछ भी, बस सिद्धामृत मिल जाये॥४॥
हे परमपिता परमेश्वर!, सामर्थ्य आपमें ऐसा।
कि तुम अपने भक्तों को, कर लेते अपने जैसा॥५॥
आनन्दमयी हे आतम, हे चतुर चिदम्बर चेतन।
है यही प्रार्थना स्वामी, हमको भी अपना लो तुम॥६॥
हे शुद्ध सिद्ध परमेष्ठी, दुष्कर्म नशाये जैसे।
निर्विघ्न हमें भी कर दो, माँ शिशु को करती जैसे॥७॥
हे नित्य निरंजन निर्मल, हो पापों का प्रक्षालन।
यों तीर्थ बनाने हमको, तुम रहो हृदय में क्षण-क्षण॥८॥
खलु चिच्चदेव परमातम, तुम हम से दूर न जाना।
हे ज्ञान ज्योति सिद्धातम, झट हमको पास बुलाना॥९॥
हे चिदानंद के रसिया(प्रेमी), तुम हम पर प्रसन्न रहना।
हो भले भिन्न तुम हमसे, पर कभी खिन्न न रहना॥१०॥
हे अखिल विश्व के गुरुवर, दो नूतनमति सन्मति भी।
हे तेजस्वी ओजस्वी, विश्रान्त करो भव गति भी॥११॥
हे वीतराग विज्ञानी, विज्ञान नगर अभियंता।
यों रचना करो हमारी, हम बनें सिद्ध भगवंता॥१२॥
हे रत्नत्रय के जोहरी, हे परम तृप्त शिव ज्योति।
अब हमें निखारो ऐसे, ज्यों चमके हीरे मोती॥१३॥
चैतन्य बाग के मालिक, चारित्र गंध रस भर दो।
अब अंतर पुष्प खिला के, चेतनमय सौरभ भर दो॥१४॥

हे चिन्मूरत बिनमूरत, हे आत्म नगर के शिल्पी।
अब ऐसे हमें तराशो, ज्यों मूरत हो अन्तर की॥१५॥
हे मुक्ति वधू के स्वामी, तुम मोक्ष कुँवर कहलाये।
दो हमको वह वरमाला, जो मुक्ति रमा को भाये॥१६॥
हे आत्मकलश निर्माता, हे सहजानंद स्वरूपी।
अब हमें बना लो ऐसे, ज्यों नित्यानंद अरूपी॥१७॥
हैं बन्धु मित्र न रिश्ते, भय रोग शोक नहीं दुख भी।
कुछ ऐसा करो हमारा, संसार बचे न कुछ भी॥१८॥
हे अन्तर्यामी भगवन्, कुछ भी न नित्य यहाँ पर।
नित रहो हमारे मन में, हम जाएँ और कहाँ पर॥१९॥
गम्भीर वीर हे धीरा, हे विश्ववन्द्य अखिलेश्वर।
करो भ्रान्ति दूर हमारी, साम्राज्य ज्ञान सर्वेश्वर॥२०॥
हम सिद्ध दशा कब पाएँ, बस यही हमारी इच्छा।
अब निज से निज को मिलने, दो साँची शिक्षा दीक्षा॥२१॥
हे चिन्मय आश्रय दाता, श्रद्धा से हम भर आये।
जिन दर्शन निज दर्शन दो, 'सुव्रत' जिस पर ललचाये॥२२॥

अनन्त गुण भण्डार है, पूर्ण कहे वह कौन।
हम तो श्रद्धा के सुमन, अर्पित कर हों मौन॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अनंत सिद्ध स्वामी करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, अनन्त सिद्ध जिनराय॥

(पुष्पांजलिं)

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन विधान

स्थापना

(दोहा)

जिनवर नाथ विदेह के, तीर्थंकर प्रभु बीस।
विद्यमान रहते सदा, उन्हें झुकाएँ शीश॥

पंचचामर (नाराच)

विदेहक्षेत्र में जिनेश बीस विद्यमान हैं।
वही हमें सहाय हैं, वही हमारी शान हैं॥
विराजमान जो सदा समो-समाज में रहें।
नमोऽस्तु है उन्हें सदैव जो स्वरूप में रहें॥
विदेहक्षेत्र की सुतीर्थ वन्दना न पा सकें।
न पुण्य है न भाग्य है, अतः न दर्श पा सकें॥
न शब्द हैं न द्रव्य है न अर्चना रचा सकें।
उन्हें यहीं पुकार रोज शीश ही झुका सकें॥

(दोहा)

पूर्ण काम हमने किया, जपकर तेरा नाम।
मन में आकर आप भी, पूर्ण करो निज काम॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकर जिनसमूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्...। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् संन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं...)

मलीन कर्म से रहे, अतः न शुद्ध हो सके।
न क्षीर नीर ला सके, न जन्म मृत्यु धो सके॥
नशाए जन्म आदि जो, जिनेन्द्र वो समुद्र दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं....।

सराग हो सभी सहें, विराग से न राग है।
जला रही अतृप्त मोह, राग-द्वेष आग है॥
बुझाए राग आग जो, जिनेन्द्र साम्य भाव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं....।

झुकाव अन्य पै रहा, किये न आत्म साधना।
घुमाव विश्व में हुआ, मिली न शुद्ध चेतना॥
निवास मोक्ष में मिले, अतः जिनेन्द्र छाँव दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

गुलाब काम का प्रतीक, त्याग का सरोज है।
गुलाब में फँसे खिला न, आत्म का सरोज है॥
स्वभाव पुष्प सी खिलाइये, विदीर्ण आत्म को।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

न शान्त हो सकी क्षुधा, न तृप्त चित्त हो सका।
न हो सके विरक्त सो, अभक्ष्य-भक्ष्य को भखा॥
अशेष कामना तजें, स्वभाव ज्ञान वस्तु दो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं....।

प्रकाश के प्रभाव से, पदार्थ अन्य ही दिखें।
न दीप वो कभी जला, जहाँ जिनेन्द्र ही दिखें॥
जिनेन्द्र पूजने चले, निजात्म तत्त्व प्राप्त हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं....।

चिदात्म के विलास के, विकास तो हुये नहीं।
चली विभाव आधियाँ, स्वभाव जो छुये नहीं॥
जिनेन्द्र गंध में रमें, विनाश कर्म गंध हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं....।

कि पाप नर्क दें कि, पुण्य स्वर्ग भोग मोक्ष दें।
चुनाव क्या करें यही, जिनेन्द्र भक्त सोच लें॥
अभाव पाप पुण्य का, जिनेन्द्र के बिना न हो।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं....।

त्रिलोक में त्रिकाल में, जिनेन्द्र धर्म मात्र है।
उदार दृष्टिकोण भक्त, मात्र धर्म पात्र है॥
विशुद्ध है दयामयी, क्षमादि धर्म धारता।
स्वरूप वस्तु का यही, अनंत भव्य तारता॥
न भेदभाव ये करे, कि भेदज्ञान तो करे।
न वित्त राग ये करे, कि वीतरागता तो करे॥
जिनेन्द्र देव से सदैव, धर्म चक्र तो चले।
पदारविन्द से हुए न?, कौन-कौन के भले॥
कि शंखनाद ज्यों हुआ, त्रिलोक में ध्वजा उड़ी।
पतंग भक्ति की उड़ी, कि डोर आप से जुड़ी॥
सँभालिये पतंग तंग, कीजिये न भक्त को।
तभी विदेह के सभी, जिनेन्द्र को नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

जयमाला

(दोहा)

दुर्लभ जिन-दर्शन रहा, दुर्लभ जिन-आशीष।
दुर्लभ जिन-महिमा कहें, अतः झुकायें शीश॥

(ज्ञानोदय)

अनादिकाल से धर्मतीर्थ बिन, भव-सागर में डूब रहे।
किन्तु अभी तक मिले न भगवन्, चेतन पाने जूझ रहे॥
बड़ी-बड़ी दुर्लभता से अब, जिन-दर्शन जिन-धर्म मिला।
साक्षात् प्रभु तो मिल न पाये, जिन-बिम्बों से हृदय खिला॥१॥
हृदय खिला लेकिन हम उसमें, प्रभु आसीन न कर पाए।
भूत भविष्यत और आज भी, चिदात्म शोध न कर पाए॥
कभी भूत की याद में रोये, कभी भविष्य की चिंता में।
कुछ न मिला सो यह मन लागा, विद्यमान भगवंता में॥२॥
अनन्त है आकाश बीच में, लोक जहाँ प्राणी रहते।
मध्यम त्रसनाली में त्रस हों, लोकालोक इसे कहते॥
लोकशिखर पर सिद्ध विराजें, ऊर्ध्वलोक में देव रहें।
अधोलोक में देव नारकी, मध्यलोक हम लोग रहें॥३॥
एक राजु के मध्यलोक में, असंख्यात हैं सागर द्वीप।
जम्बूधातकी पुष्करार्द्ध ये, ढाई द्वीप है बीचों-बीच॥
पाँचमेरुमय पाँच विदेह के, एक क्षेत्र में हैं बत्तीस।
पूर्ण एक सौ साठ जहाँ पर, चौथाकाल विहरते ईश॥४॥
पाँच भरत ऐरावत पाँचों, कर्म भूमियाँ दस जिनमें।
सभी एक सौ सत्तर होतीं, इतने तीर्थंकर इनमें॥

एक विदेह के पूरब पश्चिम, कुल होते बत्तीस नगर।
जिनमें कम से कम आठों में, मिलें एक बस तीर्थंकर॥५॥
इस विध पाँच विदेह क्षेत्र के, हुये बीस तीर्थंकर जी।
पाँच-पाँच सौ धनुष ऊँचाई, पूर्व कोटि की आयु भी॥
आयु पूर्ण कर मोक्ष पधारें, विद्यमान जो तीर्थंकर।
उसी नाम के मुनि तब बनते, केवलज्ञानी तीर्थंकर॥६॥
सीमंधर युगमंधर बाहु, सुबाहु सुजात स्वयंप्रभ जी।
श्री ऋषभनाथ अनंतवीर्य जी, सौरीप्रभु विशाल कीर्ति॥
वज्रधर चन्द्रानन चन्द्रबाहु, भुजंग ईश्वर नेमि जी।
वीरसेन प्रभु महाभद्रजी, देवयश अजितवीर्य जी॥७॥
विद्यमान बीसों तीर्थंकर, विदेह क्षेत्र में यही रहें।
वहाँ देह से जा न सकें हम, पुण्य कथा हम यहीं कहें॥
निजी वज्र पौरुष से ये प्रभु, पाँचों कल्याणक पाते।
वीतराग विज्ञान चरित से, निज का स्वरूप प्रकटाते॥८॥
नाम मात्र हर काम बनाता, पाप ताप संताप हरे।
पुण्य वर्गणा शीश झुकायें, आतम भवदधि पार करे॥
'सुव्रत' साक्षात् प्रभुदर्शन कर, निजानंद रस पान करें।
इसीलिए तो विदेह क्षेत्र के, प्रभुओं का सम्मान करें॥९॥

(सोरठा)

विदेहक्षेत्र के बीस, तीर्थंकर जो उर धरें।
पा उनका आशीष, ऋद्धि-सिद्धि पा भव तरें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

विद्यमान के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, विद्यमान जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावलि (चौपाई)

सीमन्धर प्रभु श्री मन धर के, आतमधन पाये भव तर के।
सुख संपत्ति मिले अविनाशी, हम तो नमोस्तु के अभिलाषी॥

ॐ ह्रीं जिनसुखसंपत्तिदायक श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

युगमन्धर स्वामी युग मनधर, युगपत् जानें देखें निज-पर।
अंतरंग बहिरंग गुणी हों, अतः नमोस्तु कर भक्त धनी हों॥

ॐ ह्रीं कालदुष्प्रभावनाशक श्री युगमन्धर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

बाहु बाहु-निज पौरुष बल से, दूर हुये जग के दल-दल से।
दल-दल तजने पौरुष पायें, अतः नमोस्तु करके गुण पायें॥

ॐ ह्रीं बाहुबलदुष्प्रभावनाशक श्री बाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

जय अरिहन्त सुबाहु सुभावी, तजे विभावी बने स्वभावी।
हम अभिमान व्यर्थ का छोड़ें, अतः नमोस्तु करने सिर मोड़ें॥

ॐ ह्रीं सुबाहुबलदायक श्री सुबाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

यथाजात प्रभु सुजात स्वामी, यथाख्यात चेतन के धामी।
बालक सम अविकारी हम हों, अतः नमोस्तु कर शुद्धातम हों॥

ॐ ह्रीं यथाजातभावदायक श्री सुजात जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

पूज्य स्वयंप्रभ बने स्वयंभू, जिससे गूँजे जग अंबर भू।
स्वयं प्रतिष्ठित समकित पाने, करते नमोस्तु हम गुण गाने॥

ॐ ह्रीं स्वयंभूभावदायक श्री स्वयंप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

धर्म ध्वजा थामें ऋषभानन, हुये धर्ममय भक्त रु भगवन।
तजें अधर्म ज्ञानगुण पायें, अतः नमोस्तु कर शीश झुकायें॥
ॐ ह्रीं अधर्मकर्मनाशक श्री ऋषभानन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥
अनन्तवीर्य शक्ति प्रकटा के, मोहजाल तोड़े अकुला के।
बंध हरण को चरित शक्ति दो, अतः नमोस्तु कर प्रभु भक्ति हो॥
ॐ ह्रीं मोहजालहर्त्ता श्री अनन्तवीर्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥
परम पूज्य सौरीप्रभ सुखिया, समवसरण के सुन्दर मुखिया।
त्यागें दुख, दुख के कारण हम, अतः नमोस्तु को पड़ें चरण हम॥
ॐ ह्रीं दुःखविघ्नहर्त्ता श्री सौरिप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥९॥
विशाल कीर्ति का यश जब फैला, जो हर लेता तत्त्व विषैला।
हम बन जायें प्रभु के चेले, अतः नमोस्तु को लगते मेले॥
ॐ ह्रीं कीर्तिविस्तारक श्री विशालकीर्ति जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१०॥
पूज्य वज्रधर वज्र सरीखे, जिनसे वज्र कठिनता सीखे।
हम तो दया सीखने आये, अतः नमोस्तु करने ललचाये॥
ॐ ह्रीं चारित्रदृढ़तादायक श्री वज्रधर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥११॥
चन्द्रानन चन्दा से सुन्दर, फिर भी रखें न वस्त्राडम्बर।
चंदा तारे करें अर्चना, हम तो नमोस्तु करें वंदना॥
ॐ ह्रीं चन्द्रमुखीआत्मदायक श्री चन्द्रानन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१२॥
चन्द्रबाहु प्रभु चाँद चकोरे, पूर्ण दिगम्बर गोरे-गोरे।
पाप पुण्य दुनियाँ के त्यागी, हम तो नमोस्तु के अनुरागी॥
ॐ ह्रीं अविकारीभावदायक श्री चन्द्रबाहु जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१३॥
भोग भुजंग का जहर उतारे, अतः भुजंग नाम प्रभु धारे।
हम चिद्रूप बनें भगवन्ता, अतः नमोस्तु हैं नन्तानन्ता॥
ॐ ह्रीं विषयवासनाहर्त्ता श्री भुजंग जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१४॥

ईश्वर निज में जो प्रकटाये, जगत्-पूज्य ईश्वर कहलाये।
हम मिथ्यात्व हरें व्रत पालें, तब ही नमोस्तु कर गुण गा लें॥

ॐ ह्रीं आज्ञाप्रभाववर्धक श्री ईश्वर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१५॥

धर्मधुरी जो तत्त्व विचारें, वही नेमिप्रभु सबको तारें।
ग्रंथ हरें निर्ग्रंथ बनें हम, अतः नमोस्तु कर भजन करें हम॥

ॐ ह्रीं सदासहायस्वरूप श्री नेमिप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१६॥

वीरसेन प्रभु वीरसिंह हैं, भव सागर के तीरसिंह हैं।
हमको भव से पार उतारें, हम नमोस्तु कर भाग्य सँवारें॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियपराजयभावहर्त्ता श्री वीरसेन जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१७॥

महाभद्र जो सभ्य सभी से, भक्त नाम सुन झुके तभी से।
संयम अंगीकार करें हम, अतः नमोस्तु कर भद्र बनें हम॥

ॐ ह्रीं अभद्रव्यवहारहर्त्ता श्री महाभद्र जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१८॥

पूज्य देवयश निज यश बांटें, कर्म कालिमा सबकी छाँटें।
हम यशवान बनें ओजस्वी, अतः नमोस्तु कर बनें यशस्वी॥

ॐ ह्रीं अपकीर्तिविनाशक श्री देवयश जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१९॥

अजितवीर्य प्रभु अजित विश्व में, अजितवीर्य हम बनें भविष्य में।
शुद्ध विशुद्ध भावना करना, करके नमोस्तु प्रार्थना करना॥

ॐ ह्रीं आत्मबलवीर्यवर्धक श्री अजितवीर्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२०॥

पूर्णार्घ्य

कर्मोदय मिथ्यात्व भाव से, फँसी चेतना दुष्प्रभाव से।
समकित अंगीकार करें हम, सम्यग्ज्ञान चरित्र धरें हम॥
आतम के सब विभाव हरके, निर्विकल्प परमातम भजके।
चेतन का चिद्रूप सजायें, अतः आपको अर्घ्य चढ़ायें॥

(दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं.... ।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भले दूर हैं देह से, किन्तु हृदय से पास।
अंतस का अंतर हरें, अतः बने हम दास॥
भक्त दास संन्यास को, पाने को बेचैन।
अतः कहें जयमालिका, बनकर साँचे जैन॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सपने टूट रहे हों, जीवन रेखा टूटी हो।
जिनके अपने छूट गये हों, किस्मत गगरी फूटी हो।
जीवन से जो ऊब चुके हों, व्यसन पंथ में डूबे हों।
धर्म कर्म पर नहीं भरोसा, दौड़ धूप में जूझे हों॥१॥
ऐसे जीव भले बिन मन से, अगर नाम प्रभु का लेते।
इसी भाव से भक्तजनों को, प्रभु नजदीक बुला लेते।
देकर चरण शरण प्रभु अपनी, नजर दया की करते ज्यों।
मनचाही फिर मिले वस्तुयें, निज को जिनसम करते त्यों॥२॥
प्रथमदेव सीमन्धर भजलो, जो भवसागर पार करें।
युगमन्धर प्रभु की यादों से, भक्त निजी उद्धार करें।
पूज्य बाहुप्रभु को सुमरें फिर, जो सम्यक् पुरुषार्थ कहें।
नमन करें सुबाहु जिनवर को, जो भक्तों के साथ रहें॥३॥
करें नमोस्तु सुजात स्वामी को, जो जीवन को धन्य करें।

पूज्य स्वयंप्रभु को झुककर के, अपनी आत्म प्रसन्न करें।
ऋषभानन प्रभु की अर्चा से, धर्मचक्र का रथ पाओ।
पूज्य अनंतवीर्य की चर्चा, गाकर निज सत्ता पाओ॥४॥
सौरीप्रभु की करें वंदना, सर्व कर्म संहार करें।
विनय विशालकीर्ति की करके, निज का निज शृंगार करें।
पैर वज्रधर प्रभु के पड़के, वैर हरो शिव सैर करो।
चन्द्रानन के चित् चंदन से, चिदानंद में धैर्य धरो॥५॥
चन्द्रबाहु चैतन्य चंद्र का, उदय करें भय भूत हरें।
प्रभु भुजंग के चरणामृत से, विषय भोग के विष उतरें।
ईश्वर प्रभु दें गीत आत्म स्वर, नमस्कार इसलिए करें।
पूज्य नेमिप्रभु को नतमस्तक, दस्तक दें कल्याण करें॥६॥
वीरसेन को करें नमामि, जैन चिह्न स्वीकार करें।
महाभद्र की महा-अर्चना, वैभाविक परिहार करें।
पूज्य देवयश का यश वांचे, नांचें आत्मिक आंगन में।
अजितवीर्य से विजय प्राप्ति को, पहुँचे मंदिर प्रांगण में॥७॥
यथाशक्ति से भावभक्ति से, श्रद्धा से दूरी कम की।
घर से प्रभु प्रभु से शुद्धातम, राह मिले निज आतम की।
अंतर बाह्य सुमंगल छाये, विश्व अमंगल टल जायें।
विद्यमान साक्षात् मिलें प्रभु, 'सुव्रत' निज मंदिर पायें॥८॥

(सोरठा)

प्रक्षालित हो देह, मनोवचन चैतन्य भी।
बनती देह विदेह, गुण गाकर हों धन्य भी॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

विद्यमान के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, विद्यमान जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(प्रशस्ति)

नगर कटेरा है जहाँ, मूल पार्श्व भगवान।
विद्यमान भगवान का, पूरा हुआ विधान॥
दो हजार चौदह रहा, दस बारह तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥२॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥३॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएँगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएँगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥४॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥५॥

===